क्रं. –56. 11 / 07 / 2017

इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय

Indira Gandhi Krishi Vishwavidyalaya

शहीद गुंडाधूर कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र

Shaheed Gundadhoor College of Agriculture & Research Station

कुम्हरावण्ड, जगदलपुर – 494005 Kumhrawand, Jagdalpur – 494005 (C.G.)

Ph. (O) - 07782 - 229150 (Fax) 229360 (R) 229343 Email - zars_igau@rediffmail.com

क्र./श.गु.कृ.महा.एवं अनु.केन्द्र/2017–18/ GKMS *जगदलपुर, दिनांक 11/07/2017*

बस्तर पठार कृषि जलवायु क्षेत्र के लिए कृषि सलाह सेवा बुलेटिन (08 जुलाई से 11 जुलाई, 2017)

पिछले सप्ताह की विशिष्ठ मौसम स्थितियाँ

वर्षा मि.मी.	0.4
अधिकतम तापमान डिग्री. से.	30.2 - 32.7
न्युनतम तापमान डिग्री. से.	22.7 - 24.0
सापेक्ष आर्द्रता प्रतिशत	57 - 94
वायु गति कि.मी./घंटा	4.9 - 6.3

पिछले सप्ताह कृषि मौसम वेधशाला, कुम्हरावण्ड में मि.मी. 0.4 वर्षा दर्ज की गई। अधिकतम तापमान 30.2 से 32.7 डिग्री सेंग्रे. के बीच रहा। न्यूनतम तापमान 22.7 से 24.0 डिग्री सेग्रे. के मध्य रहा। सापेक्ष आर्द्रता 57 से 94 प्रतिशत के मध्य दर्ज की गई। वायु गति 4.9 से 6.3 किमी./घंटा के मध्य रही।

12 से 16 जुलाई 2017 तक मौसम पुर्वानुमान कोंण्डागांव

मौसम कारक	पुर्वानुमान				
	दिवस –1 12 जुलाई	दिवस –2 13 जुलाई	दिवस –3 14 जुलाई	दिवस –4 15 जुलाई	दिवस –5 16 जुलाई
वर्षा मि.मी.	**4**	**4**	**5**	**7**	**5**
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रें)	**30**	**30**	**30**	**29**	**29**
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रें)	**22**	**22**	**22**	**23**	**24**
कुल बादल की मात्रा (प्रतिशत)	**100**	**100**	**100**	**100**	**100**
सापेक्ष आर्द्रता (सुबह/शाम)	**95/70**	**95/70**	**95/70**	**95/70**	**95/70**
वायु गति कि. मी./घण्टा एवं दिशा	**3/SW**	**3/SW**	**4/SW**	**4/SW**	**4/SW**

भारत मौसम विज्ञान विभाग रायपुर द्वारा जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार आने वाले **5** दिनो में छत्तीसगढ़ के बस्तर पठारी भाग में बारिश होने एवं बादल छायें रहने की तथा हवा में **70 से 95** प्रतिशत नमी होने की संभावना है। अधिकतम तापमान लगभग **28 से 30**°C रहने की संभावना है एवं न्यूनतम तापमान **22 से 24**°C के बीच दर्ज किए जाने की संभावना है। आने वाले दिनो में हवा **दक्षिण–पश्चिम** दिशा से चलने की संभावना है, तथा इसकी गति लगभग **3 से 4** किलोमीटर/घंटा रहने कि संभावना है।

<u>कृषि मौसम सलाह :–</u>

<table>
<tr>
<td>बीजोपचार</td>
<td>
खरीफ मौसम के फसलो के बीजों का बीजोपचार जरूर करें।
➢ (क) अदैहिक दवायें:– इन दवाओं से उपचारित करने पर सभी फसलों के बीज सतह पर मौजूद फफूंद नष्ट जाती है। इनमें प्रमुख थीरम, केप्टान, डायथेन एम–45। इन दवाओं की 3.5 ग्राम मात्रा प्रति किलो बीज की दर से उपयोग करें।
➢ (ख) दैहिक दवायें:– इन दवाओं से उपचारित करने से बीज के भीतर मौजूद फफूंद नष्ट हो जाती है साथ ही यह बीजांकुर को भी 15–20 दिनों तक रोगों से सुरक्षा प्रदान करती है। इनमें मुख्यतः वीटावैक्स एवं बाविस्टिन का उपयोग 2 से 2.5 ग्राम मात्रा प्रति किलो बीजदर से उपयोग में लाना चाहिए।
➢ (ग) जैव उत्पाद (बायोएजेन्ट) – ट्राइकोड्रमा हारजियनम या ट्राइकोड्रमा विरिडी 6–8 ग्राम प्रति किलोग्राम बीजदर से उपचारित करे तथा आवश्यकता होने पर जीवाणु स्यूडोमोनास फ्यूरोसेन्स से भी बीजोपचार करे।
</td>
</tr>
<tr>
<td>खरीफ फसल</td>
<td>
❖ धान उत्पादन के एस.आर.आई. पद्धति :– इस पद्धति में पानी एवं बीज की काफी बचत होती है तथा उत्पादन 20 प्रतिशत से ज्यादा होता है। 1 एकड़ जमीन के लिए 2 किलोग्राम बीज का नर्सरी तैयार करे, जिसे खेत में रोपा लगाना है उसमें 10 क्विंटल आर्गेनिक खाद मिला दे। 10 से 14 दिनों के धान के पौधें को 20 या 24 सेंटीमीटर की दूरी पर लगायें। पौधे से पौधे एवं लाइन से लाइन की दूरी बराबर रखें। पौध की वानस्पतिक अवस्था तक पानी जमा होने न दे। भूमि में जितना दरार उत्पन्न होगा उतना अच्छा होगा। बीच–बीच में नमी प्रदान कराये। फूल आने के बाद 1 से 3 सेंटीमीटर पानी रखें। खरपतवार नियंत्रण के लिए कोना वीइर 10–14 दिनों के अंतराल 2 से 3 बार चलाये। आवश्यकमा होने पर रासायनिक खाद दे।
धान की फसल के लिए पोषक तत्वों (नत्रजन स्फूर व पोटाश)की मात्रा (कि.ग्रा./हे.)
<table>
<tr><th>क्र.</th><th>धान की अवधि</th><th>नत्रजन</th><th>स्फूर</th><th>पोटाश</th></tr>
<tr><td>1</td><td>80 – 100</td><td>40–60</td><td>20–40</td><td>10–15</td></tr>
<tr><td>2</td><td>101 से 125 (बौनी फसल)</td><td>60–80</td><td>30–40</td><td>15–20</td></tr>
<tr><td>3</td><td>126 से 140</td><td>80–100</td><td>40–50</td><td>20–25</td></tr>
<tr><td rowspan="3">4</td><td colspan="4">141 से अधिक</td></tr>
<tr><td>● बौनी किस्में</td><td>80–100</td><td>40–50</td><td>20–25</td></tr>
<tr><td>● ऊंची किस्में</td><td>40–60</td><td>20–30</td><td>10–15</td></tr>
</table>
❖ बतर स्थिति में थरहा डालने के 2–4 दिन के अन्दर ब्यूटाक्लोर या थायोबेनकार्प 1–15 कि./हे. सक्रिय तत्व या आक्साडायर्जिल 70–100 ग्राम/हे. सक्रिय तत्व या प्रिटिलाक्लोर + सेफनर 500 ग्राम/हे. सक्रिय तत्व का छिड़काव करें।
❖ कतार बोनी– बुवाई के 3–4 दिन के अन्दर ब्यूटाक्लोर या पेण्डीमेथीलिन 1–15 कि./हे. सक्रिय तत्व या ऑक्साडायर्जिल 70 ग्राम/हे. सक्रिय तत्व का छिड़काव करें। बुवाई के 30–35 दिन बाद कतारों के बीच पतले हल द्वारा जुताई करें या हाथ से निंदाई करें। धान का अंकुरण होने के 14–20 दिन बाद यदि सावा तथा सॅकरी पत्ती वाले खरपतवारों
</td>
</tr>
</table>

	का प्रकोप अधिक हो तो फिनाक्सीप्रॉप 60 ग्राम/हें. (20–25 दिन) या साईहेलोफाप 80ग्राम/हें. (15–20 दिन में) तथा चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों के नियंत्रण के लिये इथाक्सीसल्फ्सूरान 15 ग्राम/हे. सक्रिय तत्व का उपयोग बोनी के 15–20 दिन के अन्दर करें या क्लोरीपुरान + मेटसल्फुरान 4 ग्राम सक्रिय तत्व प्रति हेंक्टेयर का छिड़काव करें यदि दोनो प्रकार के नींदा हो तो बिस्पायरीबैक या पिनाक्सुलम 25 ग्राम सक्रिय तत्व प्रति हें बोनी के 20 से 25 दिन के अन्दर करें। **तिलहन की प्रमुख फसलो की महतवपूर्ण किस्में एवं बीज दर–** ❖ **सोयाबीन –** बीज दर 80–100 कि./हे. – जे.एस. –335, इंदिरा सोया – 9, जे.एस. –93–05। ❖ **मूंगफल्ली –** बीज दर 100–120 कि./हे. – एस.बी. –11(जे. 11), आई.सी.जी.–37, आई. सी.जी.–44, टी.ए.जी.–24, टी.ए.जी.–28। ❖ **तिल –** बीज दर 05–06 कि./हे. – टी.के.जी. –21, टी.के.जी. –22, टी.के.जी. –55, टी. के.जी. –8 । ❖ **टमाटर की उन्नत किस्में** – पूसा अर्लीड्वार्फ, स्वीट 72, पूसा रूबी, पूसा गोरव, मंगला, डी.व्ही.आर.टी.–2, सी.ओ.–3, नवीन, लक्ष्मी 5005, एन.एस.815। ❖ **बैंगन की उन्नत किस्में** – पंचाब सदाबहार, के.एस.331, पी.पी.एल., आई.व्ही.बी.एल.–9, पी. एच.–5, पी.एच.6, के.एस.224, ए.आर.बी.एच.–543। ❖ आगामी खरीफ फसलों हेतु धान की अनुसंसित किस्में एवं खरीफ हेतु खेत की परिस्थिति अनुकूल धान की उन्नत प्रजातियों के प्रमाणित बीजों का खरीद एवं संग्रहण की व्यवस्था करें लेवें। ❖ उच्चहन भूमि (टिकरा, मरहान) में लघु धान्य फसलों की खेती करें जिनमें, रागी, कोदो एवं कुटकी मुख्य फसलों है। ● रागी – जी. पी. यू. 28, व्ही. आर. 708। ● कोदो – इंदिरा कोदो –1, जे.के. 48, जे.के. 155। ● कुटकी – जे.के. 8। ❖ खरपतवारों को उगने दे तथा बुआई के 1 माह पूर्व खरपतवारनाशी (ग्लाइफोसेट) 1 ली. प्रति हेक्टेअर की दर से खरपतवारो पर छिड़काव करें। इससे लगभग 50 प्रतिशत तक खरपतवारों की कमी आयेंगी। ❖ खरीफ हेतु पपीता, सीताफल का नर्सरी तैयार करें।
सब्जी	❖ टमाटर , मिर्च में थ्रीप्स किट के लिए डायमेथोएट का 1.5 मि.लि./लीटर पानी की दर से छिड़काव करें एवं दुसरा छिड़काव 15 दिन बाद 5 प्रतिशत का करें। ❖ सब्जी वाली फसलों में मुख्यतः थ्रीप्स एवं लाल मकड़ी का प्रकोप होता है। थ्रीप्स के निदान हेतु डायमेथोस्ट 30ईसी का 1.5 मिली/लिटर पानी का स्प्रे प्रभावी होता है। लाल मकड़ी के निदान के लिए डायकोफाल 1 मिली/लिटर की दर से दिड़काव करें। ❖ भिण्डी एवं बरबट्‌टी में तना छेदक एवं फल भेदक का प्रकोप होने पर इसके नियंत्रण हेतु 1 से 1.5मिली. क्लोरोपायरीफास का छिड़काव करें। ❖ सब्जियों में मैनी, तैला एवं चैंपा का आक्रमण होने पर पीला प्रपंच लगाये साथ ही डायमेथोएट का 1.5 मि.ली./लिटर पानी की दर से छिड़काव कर सकते है।
पशुपालन	❖ दुधारू पशु में होने वाले घातक रोग –गलघोंटू (एच.एस.)एकटंकी (बी.क्यू.)एन्थ्रैक्स (प्लीहा रोग)खुरपका मुॅहपका (एफ.एम.डी.)कृमि रोग (वर्मस)थनैला रोग (मस्टाइटिस) बचाव के

	लिए पशु चिकित्सक की सलाह के बाद टीकाकरण करें। कृमि रोकथाम के लिए बरसात से पहले व बरसात के बाद में सभी पशुओं को कृमिनाशक दवा खिललायें। पाइपेराजीन, वेनमिनथ, अलवेन्डाजोन, पानाक्योर या निकट के पशु चिकित्सक की सलाह से दिया जा सकता है। दवाई मिला पशु आहार इसके लिए सरल व सस्ता उपाय है। वेटफेन–600 पशु चिकित्सकों की सलाह से दिया जा सकता है। अधिक जानकारी एवं उपचार हेतु निकट के पशु चिकित्सक से परामर्श करें।

प्रयोजक – भारतीय मौसम विभाग (भूमि विज्ञान मंत्रालय), नई दिल्ली, सहयोग–अखिल भारतीय समन्वित बारानी खेती परियोजना, हैदराबाद

अधिष्ठाता